



सितम्बर - अक्टूबर, 2021

दिल्लीचिल्ड्रेन्स
टाइम्स

वर्ष 1996 से प्रकाशित

Delhi
Childrens
Times

Since 1996



संपादक की कलम से

नमस्कार दोस्तों आशा है कि आप अच्छा कर रहे हैं, हम वर्ष के अंत में हैं और हम आपके लिए वर्ष का अंतिम संस्करण - दिल्ली चिल्ड्रेन टाइम्स प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वैरिएंट ओमाइक्रोन के कारण फिर से हमारे स्कूल बंद हैं और हमें सरकार द्वारा निर्देशित किया जाता है कि हम कोविड प्रोटोकॉल का पालन करें और जितना हो सके घर पर रहें। हम दिल्ली चाइल्ड राइट्स क्लब के बच्चे आपको वर्ष का नवंबर-दिसंबर संस्करण प्रस्तुत करते हैं, आशा है कि आप हमारे दोस्तों द्वारा लिखे गए लेखों को पढ़कर आनंद लेंगे, इसलिए मेरे सभी प्यारे दोस्तों और अपना ख्याल रखें।



ऑनलाइन शिक्षा

Bhoomi (Centre for the Study of Social Change, Mumbai)

प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग रही है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और टेलीविजन हमारे अधिकांश जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। इसलिए हमारे दैनिक कार्यों में इसके हस्तक्षेप से बचना मुश्किल है। तकनीक का प्रभाव मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा क्षेत्र भी इससे व्यापक रूप से प्रभावित है।

तकनीक के विकास ने बच्चों के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया है। वे अब इंटरनेट से नई चीजें सीखने के लिए अधिक उत्सुक हैं और पारंपरिक शिक्षण विधियों की तुलना में मुख्य रूप से उन पर भरोसा करते हैं

शिक्षा का विचार किताबों से परे है और इसे कक्षा के बाहर व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी की बदौलत छात्र अब सीख सकते हैं कि वे क्या चाहते हैं और तेज गति से।

ऑनलाइन शिक्षा वह जगह है जहां शिक्षा और प्रौद्योगिकी एक साथ आते हैं। यह शिक्षण और

सीखने का इलेक्ट्रॉनिक तरीका है जो छात्र को कहीं से भी सीखने में सक्षम बनाता है। ऑनलाइन शिक्षा का रूप टेक्स्ट, एनिमेशन से लेकर स्ट्रीमिंग वीडियो और छवियों तक भिन्न होता है।

ऑनलाइन शिक्षा के इस नए माहौल की तैयारी के लिए और इसके नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए ऑनलाइन सीखने के फायदे और नुकसान दोनों को समझना जरूरी है। आइए छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव के बारे में अधिक जानें

छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव छात्रों के लिए बड़ी सुविधा

शारीरिक कक्षाओं में भाग लेने के लिए छात्र को जल्दी तैयार होना पड़ता है, बहुत सारी किताबें, यात्रा और बहुत कुछ ले जाना पड़ता है। यह आसान लग सकता है, लेकिन जब आप इसे पूरा कर लेते हैं, तो यह बहुत अधिक ऊर्जा की खपत करता है और घर वापस आने पर छात्र को थका हुआ महसूस कराता है।

जबकि, ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को किसी भी समय कहीं से भी सीखने की अनुमति देती है। वे केवल एक पर्सनल कंप्यूटर और एक अच्छे

इंटरनेट कनेक्शन के साथ दुनिया के किसी भी हिस्से से अध्ययन कर सकते हैं। यह छात्रों के लिए बहुत समय और ऊर्जा बचा सकता है और उन्हें ऊर्जावान बनाए रख सकता है।

इसके अलावा, शारीरिक चुनौतियों वाले छात्रों को ऑनलाइन प्रारूप में कक्षा में भाग लेने के दौरान अधिक स्वतंत्रता होती है। यह छात्र को शारीरिक दंड और उत्पीड़न से बचने में भी मदद करता है, जिससे वे सीखने के दौरान तनाव मुक्त और आरामदायक हो जाते हैं। ऑनलाइन सीखने का एक अन्य लाभ इसकी समय दक्षता है। यह छात्रों को जब भी उपलब्ध हो और किसी भी समय कक्षाओं में भाग लेने की अनुमति देता है। इसी तरह, किसी भी मानक पाठ्यक्रम गति से ऑनलाइन शिक्षा में भाग लेना आवश्यक नहीं है। पाठ्यक्रम को समझें।

शिक्षकों और अन्य छात्रों के सामाजिक दबाव इस बात का एक बड़ा हिस्सा है कि छात्र अपने स्कूली जीवन कैसे जीते हैं। चूंकि छात्र किसी भी स्थान और समय पर ऑनलाइन शिक्षा में भाग ले सकते हैं, वे ध्यान भंग से मुक्त हो सकते हैं और अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में भाग लेते समय, प्रत्येक छात्र

अपने स्वयं के अनूठे दृष्टिकोण और ज्ञान को सामने लाता है। यह छात्र को अपने स्वयं के सीखने के अनुभव को अनुकूलित करने और उनके लिए विषिष्ट विशयों के बारे में बात करने की अनुमति देता है।

ऑनलाइन शिक्षा पाठ्यक्रम सामग्री पर चर्चा में छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है और उन्हें विशय को आसानी से समझने में मदद करती है। इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षण भी छात्रों को सहपाठियों के उत्पीड़न से बचने के लिए संदेश, ईमेल आदि के माध्यम से शिक्षक के साथ सीधा संपर्क प्रदान करता है।

स्कूल में बदमाषी और भेदभाव काफी आम है, जो नहीं होना चाहिए। स्कूल में भेदभाव और बदमाषी को खत्म करने के लिए सरकार और स्कूल प्रशासन दोनों ही बहुत कुछ कर रहे हैं। लेकिन तथ्य यह है कि वे मौजूद हैं और कई छात्रों के स्कूल से बचने का एक कारण है।

ऑनलाइन सीखने से कुछ हद तक छात्र को स्कूल में ऐसी स्थितियों से बचने में मदद मिलती है। ऑनलाइन वातावरण में छात्रों के पास कुछ हद तक गुमनामी होती है। ऑनलाइन सीखने के माहौल में भेदभाव और बदमाषी काफी हद तक अनुपस्थित है।

इसके बजाय, ऑनलाइन शिक्षा पाठ्यक्रम सामग्री और चर्चा और ज्ञान साझा करने पर अधिक केंद्रित है। यह उस छात्र को बहुत मदद करता है जो शारीरिक उत्पीड़न और बदमाषी का शिकार हुआ है।

छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा का नकारात्मक प्रभाव विशेषज्ञ निगरानी का अभाव

कक्षा के दौरान छात्रों का शारीरिक शिक्षक से सीधा संपर्क होता है। यह शिक्षक को छात्रों की बॉडी लैंग्वेज पढ़ने और यह पता लगाने की अनुमति देता है कि क्या वे समझते हैं कि वे कक्षाओं में क्या पढ़ते हैं। शरीर की भाषा जानने के बाद, शिक्षक छात्र को सिखा सकता है और उन्हें आसान तरीके से समझा सकता है।

इसके विपरीत, ऑनलाइन शिक्षा सीधे संपर्क के लिए बहुत कम अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा, कोई भी आपको समझ नहीं पाएगा या आपकी प्रगति पर नजर नहीं रख पाएगा। छात्रों को अपनी पढ़ाई में रुचि रखने की जरूरत है। वे जितने चाहें उतने वीडियो या किताबों के साथ अपना अध्ययन पूरा नहीं कर पाएंगे। ऑनलाइन शिक्षा इस तरह काम करती है। सामग्री उपलब्ध होगी, लेकिन छात्रों की कोई वास्तविक रुचि नहीं होगी।

छात्र अक्सर ऑनलाइन कक्षाओं और मनोरंजन के लिए एक दिन में छह घंटे से अधिक समय ऑनलाइन बिताते हैं। नतीजतन, वे अपने दिन का अधिकांश समय बिना निगरानी या मार्गदर्शन के स्क्रीन से चिपके रहते हैं।

छात्रों के अपने अध्ययन को पसंद करने और अन्य छात्रों के आसपास होने पर अपनी जागरूकता बढ़ाने की अधिक संभावना है। यह हमेशा देखा गया है कि जब छात्र स्कूल में एक समूह में होते हैं, तो वे अधिक सतर्क होते हैं।

एक ऑनलाइन सीखने के मंच में, छात्र किसी भी स्थान से कक्षाओं में भाग ले सकते हैं, प्रतिभागियों की बातचीत को कम कर सकते हैं, उनके चिंतन को कम कर सकते हैं और उन्हें और अधिक दूरस्थ बना सकते हैं।

इस प्रकार, कई छात्र और शिक्षक जिन्हें ऑनलाइन इतना समय बिताना पड़ता है, वे सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करना शुरू कर सकते हैं क्योंकि वे अपने साथियों के साथ बातचीत नहीं कर सकते हैं। संचार की कमी और सामाजिक अलगाव के परिणामस्वरूप अक्सर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं जैसे तनाव, चिंता और नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण विधियों का उपयोग करके छात्र ज्ञान को काफी बढ़ाया जा सकता है। दूसरी ओर, ऑनलाइन पाठ्यक्रम अक्सर छात्रों के बीच संचार कौशल के विकास की उपेक्षा करते हैं। छात्रों के पास अपने साथियों, शिक्षकों और सहपाठियों के साथ आमने-सामने संवाद करने का कोई अवसर नहीं है।

ऑनलाइन सीखने में, छात्र अपने प्रशिक्षकों के साथ आमने-सामने संवाद नहीं कर सकते हैं, जो सामाजिक अलगाव का कारण बनता है और उन्हें अनफोकस्ड महसूस करा सकता है।



Article by friend from Kyrgyzstan

Adelina (our child friend from Putnik-Kyrgyzstan)



Hello! My name is Adelina. I am 13 years old. I have been attending the Centre in Novo-Pokrovka for more than 2 years. In the Centre I learned a lot, for example: to cook, to perform, I learned English language and many other things. In the Center there are a lot of different, useful courses. I was happy to become a participant of this program because here I could develop myself. I like attending our courses. We talk about health protection, study financial literacy, set aims and learn to achieve them. We also have wonderful tea breaks. All these courses motivate us and give us useful skills in life.

Recently I began to attend glass beading lessons. I like this course a lot. Here I learned to make different things like rings, bracelets, necklaces and even flowers from big and small beads. I sell these things and have my pocket money. We learn to draw and to make different handcrafts for holidays. We are given prizes for our handcrafts, this is very encouraging.

We prepare concerts with other participants for all holidays. I like to play in different theatrical scenes that we make with children. We also dance and learn verses in Kyrgyz, Russian and English languages. Before I was rather shy but now I can perform in front of others and express my point of view without shyness. Here I found many new friends. I am very thankful to our social worker Liubov Han because she taught us a lot of useful skills. I want our Center to develop and thrive. I want some other courses to be opened in our Center. Here I gained big life experience and life skills. Here I had my first experience in sharing my knowledge with other participants.

I was chosen to be a CHE. I like looking for new, useful information and share it with others. It is a great experience. I am very grateful to the man who created this Center for us. I hope it will work long and help many other children.



दीपों का पर्व – दीपावली

Anuvesha Pawar (Centre for the Study of Social Change, Mumbai)

दीपों का पर्व – दीपावली एक सुन्दर पर्व है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान राम इस दिन राक्षस राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। अपने राजा के आगमन पर, अयोध्या के निवासियों ने इस अवसर को मनाने के लिए सड़कों और घरों को तेल के दीपों से रोशन किया। तब से, हिंदू इस त्योहार को धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाकर परंपरा का पालन कर रहे हैं। यह बच्चों का पसंदीदा त्योहार है क्योंकि उन्हें अपनी पसंदीदा मिठाई खाने और नए कपड़े पहनने को मिलता है।

यह त्योहार हमें सिखाता है कि अच्छाई की हमेशा बुराई पर जीत होती है और हमें प्रकाश से अंधकार को मिटाना चाहिए। हर भारतीय घर में दिवाली के दौरान उत्सव का माहौल देखा जा सकता है। हर कोई घरों की सफाई करने, मिठाइयां बनाने या दीया जलाने में लगा हुआ है। एक धार्मिक समारोह आमतौर पर शाम को समारोह से पहले होता है।

बच्चे अपनी पसंदीदा मिठाई के उस दंश का आनंद लेने के लिए कई दिनों तक इंतजार करते रहते हैं। घरों को गंदगी से साफ करने के लिए अच्छी तरह से साफ किया जाता है। स्वच्छता बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपके स्वास्थ्य और स्वास्थ्य का निर्धारण करेगी। यह बहुत लंबे समय से हिंदू संस्कृति का हिस्सा रहा है और “अच्छे लोग हमेशा बुरे लोगों पर जीत हासिल करते हैं” के नैतिक पाठ को बढ़ावा देते हैं।

त्योहार मानव जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। वे भाईचारे, साझा करने और मनुष्यों की सामाजिक प्रकृति का जश्न मनाते हैं। ऐसा ही एक त्योहार है दिवाली। यह हिंदुओं द्वारा अजोध्या के राजा राम के आगमन को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है, जो राक्षस राजा रावण के साथ एक भयंकर और खूनी लड़ाई के बाद आया था। यह अंधेरे के खिलाफ प्रकाश की जीत के मूल विषय का जश्न मनाता है। हमारे मानव मन सामाजिक और व्यवहारिक पैटर्न के लोकाचार से अच्छी तरह सुसज्जित हैं जो हमारे आसपास के लोगों के साथ जटिल संबंध बनाते हैं।

त्योहार अपने पड़ोसियों को जानने और उनके साथ जश्न मनाने का सही तरीका है। दिवाली हमें हर किसी के प्रति दयालु होना सिखाती है और अच्छे परिणाम आने की प्रतीक्षा करने के लिए एक धैर्यवान दिल और दिमाग है। हमारे विश्वास हमारे मन को आकार देते हैं इसलिए हमें कभी

भी त्योहारों में विश्वास नहीं खोना चाहिए। दिवाली लंबे समय से पटाखे फोड़ने से जुड़ी हुई है, लेकिन क्या यह जरूरी है? बिल्कुल नहीं! दिवाली अभी भी आश्चर्यजनक रूप से मनाई जा सकती है यदि हम सभी घर पर रहें और अपने दोस्तों और परिवार के साथ हार्दिक डिनर का आनंद लें। पटाखों को जलाने से वातावरण में हानिकारक गैसों निकलती हैं जो अंततः वायु प्रदूषण में परिणत होती हैं।

पटाखों से हमारे आसपास रहने वाले जानवरों को नुकसान होता है। हमें दूसरों की सुरक्षा से समझौता किए बिना जिम्मेदारी से त्योहार मनाना चाहिए। दीपावली के दौरान, घर ताजा पके हुए भोजन से उठने वाली स्वादिष्ट सुगंध की महक से भर जाते हैं। त्योहार के दौरान स्वादिष्ट व्यंजनों को पकाया और खाया जाता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि त्योहार हमारे बीच भाईचारे की महत्वपूर्ण भावना को बढ़ावा देने के लिए बनाए गए हैं न कि उत्सव के नाम पर हमारे परिवेश को नष्ट करने के लिए।



Plant trees to save the environment

Aditya Kumar (Mahila Development centre, Bihar)

Our nature has provided us with all the resources and facilities which are necessary for a happy life. We have received innumerable precious gifts from nature for nothing. Which we can use according to our discretion.

Trees are true companions of human life, they have great importance in our life. They provide us with clean air, flowers, wood and cool shade. In return, they do not take anything from us. When we fall ill, we take medicines, it is the herbs of trees and shrubs that work as our life savers. Every day we fall ill after coming in contact with different diseases, due to the increase in pollution, there has been a lack of clean air, that is why it is said to plant trees, save lives. Instead of harming

the trees, we make our earth greener by planting new trees.

Until a few decades ago, there was only greenery on the earth. There used to be big forests. In the blind race of modernity and urbanization, we have started setting up houses, factories and cities in their place by cutting trees, due to which our life has become like hell today.

We have to understand that our life is dependent on trees and for a happy life we have to protect the trees. If we do this then we can get rid of many problems. You can enjoy a clean life by getting rid of the poison of pollution. That's why we should plant new trees every year instead of cutting trees.

चाचा नेहरू

Supriya (Open Learning System, Odisha)

पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को हुआ था। उनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। मोती लाल नेहरू उनके पिता थे। वे एक महान वकील थे।

जवाहरलाल नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। फिर वे उच्च अध्ययन के लिए इंग्लैंड चले गए। 1912 में वे भारत लौट आए। बाद में वे एक वकील बन गए।

उन्होंने अपना अभ्यास छोड़ दिया और महात्मा गांधी के अधीन स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। वह पूरी तरह से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल थे।

उन्हें कई बार जेल भी भेजा गया था। 1947 में जब भारत आजाद हुआ तो उन्हें पहला प्रधानमंत्री चुना गया।

वे एक महान राजनेता, आदर्शवादी और स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। उन्होंने देश की सेवा के लिए कड़ी मेहनत की।

पंडित नेहरू को बच्चों से प्यार था। और बच्चे उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहकर बुलाते थे। वह हमेशा बच्चों की कंपनी को पसंद करते थे और उसका आनंद लेते थे। उन्होंने हमेशा अपनी ड्रेस में गुलाब का फूल पहना था। उनके जन्मदिन को अब बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उनके नेतृत्व में भारत ने बहुत प्रगति की। 27 मई, 1964 को उनका निधन हो गया। वे आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे। हम उन्हें हमेशा प्यार से याद करते हैं।

कहानी एक गाँव की

Raju (Pragati wheel school)

एक नदी के किनारे एक छोटा सा गाँव था। उसमें बहुत से पेड़-पौधे, खेत और पशु-पक्षी थे। नदी में औरते कपड़े धोती और बच्चे खेलते कूदते तैरते और मछलियाँ पकड़ते। वहाँ खेतों में गेहूँ, मूफली और पिली-पिली सरशो उगाई जाती थी। उस गाँव में छोटा सा तालाब भी था जहाँ कमल खिलते थे और साथ ही बतख और मेंढक भी रहते थे। इस गाँव से भी पुराना था एक जंगल। गाँव वाले मानते थे कि यह जंगल उनका पुराना दोस्त है क्योंकि वे उन्हें खाने को फल, घर बनाने को लकड़ी, बीमारी के समय दवाई के रूप में जड़ीवूटी और सबको प्यारे लगने वाले फूल भी देता था।



जैसे-जैसे गाँव में लोग बढ़ने लगे, उन्हें रहने के लिए अधिक मकानों और खेती के लिए अधिक जमीनों की जरूरत पड़ने लगी। लोगों ने पेड़ काट कर खेत बना लिए। समझदार लोगों ने चेतावनी दी कि पेड़ मत काटो पेड़ उनके दोस्त हैं। अगर इन्हे काटोगे तो गाँव के लोग मुष्किल में पड़जाएँगे। लेकिन किसी ने उनकी बात नहीं सुनी और धीरे-धीरे जंगल छोटा और कम होता गया। अब इस गाँव के बीच बर्शा पुरानी दो पेड़ मजबूती से खड़े थे। एक पेड़ था पीपल का। उसमें हर साल नरम-नरम तिकोनी पत्तिया लगी और पीपल के पेड़ के पास खड़ा था बरगद का विषाल बृक्ष।

आखिर अंत में वहीं हुआ, जिसकी समझदार लोगों के चेतावनी दी थी। चार साल तक एक बूंद भी पानी नहीं बरसा। सभी चिंतित हो गए। सूरज खूब तेज चमकता रहा। कमल सुख गया, तालाब तक सुख गए, बतखों ने गाँव छोड़ दिया। नदी में कीचड़ की एक पतली धार बन गई थी। कुछ लोग कहने लगे, "लोगों ने पेड़ काटे हैं, यह मुसीबत इसीलिए आई है। अब जैसे ही पानी बरसेगा हम लोग बहुत सारे पौधे रोपेंगे। पक्षी तिलमिला उठे। तालाब भी रोने लगे। प्यासे मेंढक भी टर्राहने लगे। सूखे खेतों ने प्रार्थना की।

अंत में सब लोगों ने एक साथ प्रार्थना करि और एक दिन सबकी प्रार्थना ने ताकत का रूप ले लिया। यह ताकत ऊपर उठती गई और अंत में वह आकाश तक पहुँच गई और चांदी जैसा चमकीला बादल बन गई। देखते ही देखते अनगिनत बादल सारे आकाश पर छा गए जिनसे सूरज का चेहरा ढक गया। फिर से कड़ो हजारों पानी के बूंदे गिरने लगी सुखी घास पर, पशु-पक्षियों पर और सभी लोगों पर। सबलोग खुश हो गए और नाचने लगे।

पीपल और बरगद के पेड़ ने बारिश को धन्यवाद देते हुए एक गीत गाया। फिर सब लोग जुट गए पौधे लगाने। गाँव फिर से हरा-भरा हो गया और उस दिन से सबने यह निश्चय किया कि अबसे वह लोग पेड़ नहीं काटेंगे बल्कि पेड़ लगाएँगे।

मेहनत का फल

Manmohan (Pragati wheel school)

वह किसान हर सुबह अपने खेत पर काम करने चला जाता था, उसका लड़का बहुत ही आलसी था, वह हर काम को कल पर टाल देता था, वह कहता था अगर हम आज काम करें या कल काम तो ही जाएगा, पर किसान उसे बहुत समझता था, इनज उसे कभी समझ नहीं आता था, एक दिन किसान अपने खेत के लिए कुछ समान लेने के लिए बाजार जाने लग रहा था, उसने अपने लड़के से कहा की जब तक मैं नहीं आता हु, तब तक खेत में रखे अनाज की तुम रखवाली कर देना, (सबसे अच्छी चार मोरल कहानी) लड़के ने अपने पिता की बात मान ली, और खेत चला गया, वह कुछ देर तक खेत में रहा और वही पर सो गया,

जीवन की सफलता की कहानियां

जब उसकी आँखे खुली तो देखा की बहुत से कबूतर, गिलहरी उस अनाज को ले जारी है, और चारो और अनाज फैला हुआ है, वह देखकर थोड़ा घबरा गया था, उसने उन्हें जल्दी-जल्दी उड़ा दिया, उसके पिता जी घर वापिस आये और

देखा की लड़का घर पर नहीं है, तो वह खेत चला गया और देखा की अनाज चारो और फैला हुआ है, वह देखकर बहुत ही गुस्सा हुआ, उसने अपने लड़के को समझाया और कहा की तुम्हे भी "मेहनत" करनी होगी और अगर तुम भी आलसी बनोगे तो जीवन में कुछ भी नहीं कर पाओगे,

जीवन में सफलता आसान नहीं कहानी नाविक का हौसला हिंदी कहानी भगवान् की लीला की हिंदी कहानी राजा और सेवक की कहानी शेर और खरगाश की कहानी

हम साल भर "मेहनत" करते है, तब हमे यह अनाज मिलता है, जिसकी बनी रोटी हम सब कहते है, अगर यह अनाज बर्बाद हो जाएगा तो हम क्या खाएँगे, आज षायद उस लड़के को अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था। इसके बाद वह अपने पिता की बात समझ गया था की "मेहनत" ही सब कुछ है अगर वो भी अपना आलसपन छोड़ता है तो बहुत कुछ कर सकता है उस दिन बाद के बाद वह कभी आलस नहीं करता था और अपने पिता के साथ खेत पर जाता था।

किसानों पर कविता

Tanya (Pragati wheel school)

जब बारिश नहीं होती है

दर्द से कराहते किसान

और बेमौसम बारिश के साथ

वहाँ नालों में बाढ़ पैदा होती है

उनके जीवन में गड़बड़ी के साथ

किसान संकट में हैं

और बिना किसी फलदायी फसल के

बैंकरों ने और अत्याचार किया

वे अँधेरे में टटोलते हैं

और जीवन का सामना करना कठिन पाते हैं

लेकिन क्या हमें कोई समाधान नहीं निकालना चाहिए

इस दयनीय स्थिति पर काबू पाने के लिए

किसी प्रकार की मुक्ति

ताकि एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सके।



तपती दोपहरी में प्यास से बेहाल एक छोटी सी चींटी पानी की तलाश में भटक रही थी। बहुत देर भटकने के बाद उसे एक नदी दिखाई पड़ी और वो खुश होकर नदी की ओर बढ़ने लगी। नदी के किनारे पहुँचकर जब उसने कल-कल बहता शीतल जल देखा, तो उसकी प्यास और बढ़ गई।

वह सीधे नदी में नहीं जा सकती थी। इसलिए किनारे पड़े एक पत्थर पर चढ़कर पानी पीने का प्रयास करने लगी। लेकिन इस प्रयास में वह अपना संतुलन खो बैठी और नदी में गिर पड़ी।

नदी के पानी में गिरते ही वह तेज धार में बहने लगी। उसे अपनी मृत्यु सामने दिखाई देने लगी। तभी कहीं से एक पत्ता उसके सामने आकर गिरा। किसी तरह वह उस पत्ते पर चढ़ गई। वह पत्ता नदी किनारे स्थित एक पेड़ पर बैठे कबूतर ने फेंका था, जिसने चींटी को पानी में गिरते हुए देख लिया था और उसके प्राण बचाना चाहता था।

पत्ते से साथ बहते हुए चींटी किनारे पर आ गई और कूदकर सूखी भूमि पर पहुँच गई। कबूतर के निःस्वार्थ भाव से की गई सहायता के कारण चींटी की जान बच पाई थी। वह मन ही मन उसका धन्यवाद करने लगी।

जे जे कॉलोनी से समाचार – नवज्योति फाउंडेशन इंडिया से कोमोल द्वारा भावना

मनुष्य को सामाजिक प्राणी माना जाता है। मानव जीवन अन्य मनुष्यों पर निर्भर करता है। मनुष्य समूहों में रहता है चाहे वह परिवार की तरह छोटा हो या शहर या देश जैसा बड़ा हो। मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है क्योंकि मनुष्य अलगाव में नहीं रह सकता है और न ही रह सकता है।

लेकिन हमारी कॉलोनी में पिछले हफ्ते जो मामला हुआ वह बहुत दुखद और डरावना है, एक परिवार में एक डबल मर्डर हुआ था, जहाँ पति-पत्नी को 3 लोगों ने मार डाला था, जो उन्हें लगभग 11:00 बजे जानते थे और ऐसा माना जाता था कि पिछले 2 वर्षों से उनके बीच किसी संपत्ति को लेकर दुष्मनी चल रही थी। 3 संदिग्ध लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया था। यह बहुत ही दुखद घटना थी, मृतक दंपति के 2 बच्चे थे – एक लड़का और एक लड़की और अब दोनों बच्चे अनाथ हैं



बटरफ्लाइज स्कूल ऑफ कुलिनरी/एंड कैटरिंग के बारे में

students of Butterflies school of culinary & catering

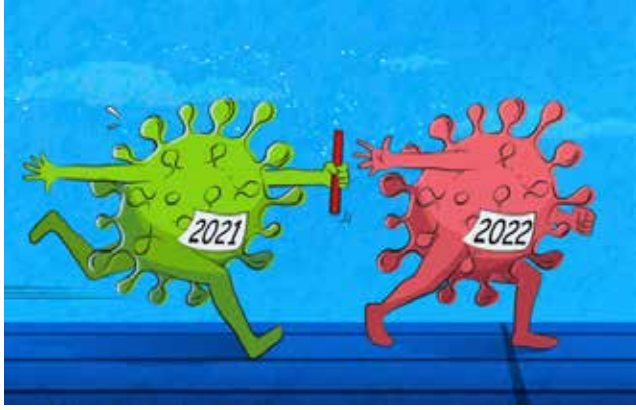
सड़क से जुड़े किशोरों और युवाओं के लिए भारत का पहला खानपान संस्थान।



बटरफ्लाइज स्कूल ऑफ कलिनरी एंड

कैटरिंग (बीएससीसी) एक महान संस्थान साबित हुआ है, जिसमें 17 वर्ष से अधिक उम्र के किशोर निर्णय लेने, नेतृत्व, टीम वर्क, प्रबंधन, उद्यमिता, संचार, शिष्टाचार और अनुशासन जैसे महत्वपूर्ण कौशल जल्दी सीखते हैं।

हमारा विशेषज्ञ प्रशिक्षण हमें विभिन्न व्यंजन, पोषण, पैकेजिंग, वितरण और विपणन और वित्तीय प्रबंधन कौशल सिखाता है। बीएससीसी अपने छात्रों को उद्यमशीलता के गुणों के साथ आत्मसात करने पर अपने प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि हमें प्रमुख होटलों में अच्छी नौकरी मिल सके या अपना खुद का उद्यम भी शुरू किया जा सके। हमारे स्कूल में व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए सभी बुनियादी जरूरतें हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक जोर देने के साथ खाना पकाने और खानपान पर ज्ञान प्रदान करना है। साथ ही यह एनआईओएस और स्वास्थ्य, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों को कवर करते हुए जीवन कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा में हमारी प्रगति सुनिश्चित करेगा। वित्त प्रबंधन और विपणन रणनीति में प्रशिक्षण पर समान जोर दिया जाता है। हम अपने पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में औद्योगिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप भी प्राप्त करते हैं ताकि हमें यह महसूस करने में मदद मिल सके कि उद्योग कैसे काम करता है। पाक कला और खानपान में व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ हम अनुभवी शिक्षकों की मदद से अकादमिक शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। बीएससीसी में नामांकित सभी किशोर भी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित हैं। हमने नेतृत्व के गुण और निर्णय लेने की क्षमता विकसित की। और अपने परिवार और समाज के प्रति आत्मनिर्भर और जिम्मेदार बन गए हैं।



Pandemic and its effects on our life

By Neha (Nai Disha)

Dear friends as we all know that during the first and second wave of Covid 19 we and all our parents faced lot of problems .We could not go to school and have to do online classes ,many of our parents lost their jobs and many of them moved back to their native villages to do farming and other activities and in this process many of the children of our age have to drop out of school and helped their parents in their daily work but as the situation little bit improved by the mid of 2021 but again in December we came to know about a new variant by the name of omicron and again our schools are closed and as per the Covid protocol we were asked to be inside our home and I am scared that if condition like second wave takes place ,I am praying to god to help us to lead our normal life like earlier days so that we could go to school daily and play happily on the ground without ant fear.





मेरा परिवार

Jyoti (Butterflies)

नमस्कार! मैं ज्योति हूँ। मैं 14 साल का हूँ। मैं अपने परिवार में दूसरा बच्चा हूँ और मेरी एक बड़ी बहन है। मैं अपने माता-पिता के साथ बहुत बंद हूँ। मैं इस परिवार में जन्म पाकर बहुत खुश हूँ। मैं 11 वीं कक्षा में स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं हमेशा अपने माता-पिता का सम्मान करता हूँ। हमारे परिवार में हम साथ रहते हैं, मेरे परिवार में मेरे पिता मां और मेरी बहन नेहा हैं। मेरे पिता एक दिहाड़ी मजदूर हैं, मां एक गृहिणी हैं और मेरी बहन एक छात्र है। मेरे पिता 45 वर्ष के हैं। साल की, माँ की उम्र 35 साल है और मेरी बहन नेहा की उम्र 16 साल है।

मुझे गुलाबी और पीला रंग पसंद है और मुझे अपने दोस्तों के साथ खेलना पसंद है। मुझे लोगों की मदद करना अच्छा लगता है। मुझे खाने में चावल और फलों में आम खाना पसंद है। मेरा परिवार अच्छा है। मैं हमेशा अपने परिवार से प्यार करता हूँ।

मैं बाल विकास खजाना (सीडीके) और बाल स्वास्थ्य और खेल सहकारी (सीएचसी) का सदस्य था, मैंने सीडीके में यहां बहुत सी चीजें सीखीं। सीडीके में मैंने जो चीजें सीखीं: वे हैं – पैसे बचाने के लिए, हमारी जरूरतों को प्राथमिकता देना, ब्याज की गणना। सीडीके ने मुझे जिम्मेदार बनाया। मेरे शिक्षकों ने मुझे सिखाया कि बड़ों का सम्मान कैसे करें और अपने परिवार से प्यार करें। सीडीके ने मुझे अनावश्यक खर्चों को नियंत्रित करने और कम करने में मदद की ताकि मैं अपने परिवार की मदद कर सकूँ। सीएचसी से मैंने प्राथमिक उपचार सीखा, स्वच्छता और पर्यावरण स्वच्छता के बारे में जागरूक हुआ।



QUIZ TIME!



1024 kilobytes is equal to _.

Ans: 1 Megabyte(MB)

Who is Paulo Coelho?

Ans: Brazilian Novelist

A figure with 6 sides is known as _____.

Ans: Hexagon

What do UPS stand for?

Ans: Uninterrupted Power Supply

At which temperature does water boil?

Ans: 100°C

Name the acid in lemon.

Ans: Citric acid

Which is the first animal to land on the moon?

Ans: Laika, The dog

Name the two Oceans in which Australia is sandwiched between?

Ans: The Indian Ocean and The Pacific Ocean

What do AM and PM stand for?

Ans: AM stands for Ante Meridiem and PM stands for Post Meridiem

Statue of Liberty is in _.

Ans- New York City

Name the five layers of Earth's atmosphere.

Ans: Exosphere, Thermosphere, Mesosphere, Stratosphere and Troposphere

Name the border of India and Pakistan.

Ans: Radcliffe Line

What is Ablutophobia?

Ans: It is the Fear of Bathing

What is the full form of HTTP?

Ans: Hypertext Transfer Protocol

Identify the Tennis Player.



Ans: Roger Federer

Which is the coldest planet in our solar system?

Ans: Neptune

Which gas is known as "Laughing gas"?

Ans: Nitrous Oxide

Name the largest temple in the World.

Ans: Angkor Wat

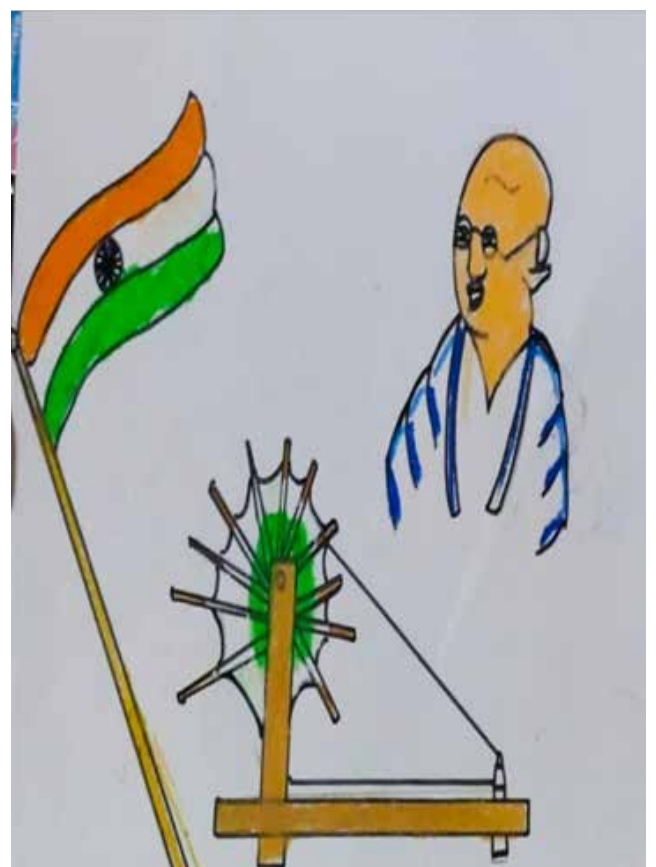
Which of the following is not a component of chlorophyll?

- a) Magnesium
- b) Carbon
- c) Calcium
- d) None of These

Ans: C. Calcium

Which is the largest freshwater lake in the world?

Ans: Lake Baikal





			8		1			
						4	3	
5								
				7		8		
						1		
	2			3				
6							7	5
		3	4					
			2			6		

5	3			7				
6			1	9	5			
	9	8					6	
8				6				3
4			8		3			1
7				2				6
	6					2	8	
			4	1	9			5
				8			7	9

आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं

अगर आपकी उम्र 9 से 16 वर्ष के बीच है तो आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं।
अगर आप बाल पत्रकार के रूप में अपने आस-पास घट रही घटनाओं को इस अखबार के माध्यम से उठाना चाहते हैं तो आपका स्वागत है।
आप बच्चों से जुड़े किसी भी मुद्दे पर अपने विचार, लेख, फोटो, चित्र आदि इसमें छापने को भेज सकते हैं शर्त बस इतनी है कि यह आपकी अपनी रचना होनी चाहिए। यह अखबार आपकी राय को दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाने की पूरी-पूरी कोशिश करेगा।
आप अपनी रचना हमें लिखकर भेजें और जहां भी जरूरत हो संदर्भ का उल्लेख जरूर करें। आप अपनी रचना के साथ अपना नाम, उम्र, स्कूल/संस्था, पूरा पता फोन नम्बर आदि जरूर भेजें।
हमारा पता : संपादक मंडल, दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स, द्वारा बटरपलाइज़,
163/4, प्रधान वाली गली, जौनापुर, नई दिल्ली -110047
पुरस्कार : तीन सबसे अच्छी रचनाओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे

यह अखबार 9 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों द्वारा लिखित, संपादित एवं प्रकाशित है। इसका उद्देश्य दिल्ली एवं इसके आसपास के इलाकों को बच्चों के लिए सुरक्षित एवं दोस्ताना बनाना है। यह अखबार दिल्ली बाल अधिकार क्लब द्वारा बटरपलाइज़ के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली बाल अधिकार क्लब C/O बटरपलाइज़, 163/4, प्रधान वाली गली, जौनापुर, नई दिल्ली -110047
भारत फोन : 011-35391068, 69, 70 E-mail : butterfliesngo@gmail.com
परियोजना सहायता : Misereor Katholische Zentralstelle, Furenwicklungshilfe.V. Germany
केवल निजी वितरण के लिए

सहयोग राशि: 5 रुपये

दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स संपादकीय दल

नया संपादकीय बोर्ड
मुख्य संपादक
सोनिया (Butterflies)
सहायक संपादक
प्राची (Butterflies)
विवेक (Casp Delhi unit)
चाइल्डरिपोर्टर:
गरिमा (Butterflies)
गुनगुन (Butterflies)
सानिया (Butterflies)
प्रियंका (Butterflies)
अभिषेक (Butterflies)
मनमोहन (Pragati wheel school)
कल्पना (Deepalaya)
विनीता (Angaza foundation)
तान्या (Pragati wheel school)
पुष्पा (Pragati wheel school)
देवेन्द्र (Pragati wheel school)
सोनाली (Casp Delhi unit)
सिया (Casp Delhi unit)

